

---

shrIgurugajAnanAShTakam

श्रीगुरुगजाननाष्टकम्

Document Information

---

Text title : Guru Gajanana (Dasganu) Ashtakam 2

File name : gurugajAnanAShTakam2.itx

Category : deities\_misc, gurudev, varadAnanda, aShTaka

Location : doc\_deities\_misc

Author : Swami Varadananda Bharati (Pracharya A. D. Athavale)

Transliterated by : Arun Parlikar

Proofread by : Arun Parlikar

Description/comments : bhAvArchanA

Acknowledge-Permission: Shri Dasganu Maharaj Pratishthan, Gorte <https://www.santkavidasganu.org>

Latest update : June 3, 2023

Send corrections to : [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

June 4, 2023

*sanskritdocuments.org*

---

श्रीगुरुगजाननाष्टकम्



(द्वितीयं )

ॐ श्री

॥ श्रीशङ्कर ॥

लोकान् भवोपहतसर्वविचारशक्तीन्  
अन्धाश्च मोहतमसा मरणाभिभूतान् ।

उद्धर्तुमेव धृतमानवविग्रहं तं  
श्रीमद्गजाननगुरुं शिरसा नमामि ॥ १ ॥

शास्त्रैरनाकलितमस्ति मखो यदीयं  
सम्भोधितं श्रुतिभिराकलने य नेति ।  
आविर्भूव सगुणं त्विह तत् परं तं  
श्रीमद्गजाननगुरुं शिरसा नमामि ॥ २ ॥

यद्दर्शनाद्भवति कुल्लतरं लृष्टञ्ज-  
मन्तर्दधात्युदुगाणं मद्मोहवृषम् ।  
अज्ञानधोरतिमिरस्य दिवाकरं तं  
श्रीमद्गजाननगुरुं शिरसा नमामि ॥ ३ ॥

कुण्डं मनो भवति यद्विषये विचारे  
मूकायते य रसना स्तवने प्रवृत्ता ।  
तं भक्तिगम्यममृतं त्रिगुणैरतीतं  
श्रीमद्गजाननगुरुं शिरसा नमामि ॥ ४ ॥

सस्थित्सुषुं परममङ्गलमात्मरुपं  
जगत्सुषुमिरडितं सततं तुरीयम् ।  
ध्यानस्थितं पदनतार्तिविनाशिनं तं  
श्रीमद्गजाननगुरुं शिरसा नमामि ॥ ५ ॥

पादोदकेन भ्रुवु येन सुधामयेन

श्रीजानरावमरुणं कृपया निरस्तम् ।

मार्कण्डेयभक्तवरेण शिवरूपिणं तं

श्रीमद्गजाननगुरुं शिरसा नमामि ॥ ६ ॥

वापी जलेन रक्षिता य यकार पूर्णा

यो वारिणा सुमधुरेण निजप्रभावात् ।

भक्त्याय शुष्कलृद्यं सजवं करोति

श्रीमद्गजाननगुरुं शिरसा नमामि ॥ ७ ॥

भक्तिर्दृढास्तु लृद्ये सततं मदीये

मा मे मनो भवतु मोहवशं कदापि ।

श्लोकेरतो वसुभितैर्गणुदासदासः

श्रीमद्गजाननगुरुं सद्यं स्तुनोति ॥ ८ ॥

एति स्वामी वरदानन्दभारतीविरचितं श्रीगुरुगजाननाष्टकं सम्पूर्णम् ।

भावार्थना (प्राथार्य अ. दा. आठवले)

<https://www.santkavidasganu.org>, <https://www.youtube.com/@varad-vani1496>

Encoded and proofread by Arun Parlikar

---

*shrIgurugajAnanAShTakam*

pdf was typeset on June 4, 2023

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

